

**DR.MALA KUMARI  
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST  
TEACHER)  
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY  
A.N.D COLLEGE SHAHPUR  
PATORY,SAMASTIPUR  
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)  
PAPER-1 ,UNIT-10,  
THINKING AND REASONING:TYPES OF  
THINKING  
LECTURE-72**

**चिन्तन के प्रकार**

**(TYPES OF THINKING)**

**चिन्तन के निम्नांकित दो भाग हैं –**

- 1 स्वली चिन्तन (AUTISTIC THINKING)
  - 2 यथार्थवादी चिन्तन (REALISTIC THINKING)
- इन दोनों का विवरण निम्नांकित है –

1 स्वली चिन्तन \_स्वली चिन्तन जैसे चिन्तन को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति अपनी काल्पनिक विचारों एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति करता है |स्वप्न (DREAM),स्वप्न \_चित्र (FANTASY)तथा अभिलाषा आदि सभी स्वली चिन्तन के उदाहरण हैं |यदि कोई छात्र कल्पना करता है कि पढाई खत्म करने बाद वह एक बड़ा ऑफिसर बनेगा ,उसके पास एक सुंदर बंगला होगा जिसमें एक चमचमाती कार होगी और उस कार में उसकी सुंदर बीबी बैठकर सैर करेगी तो यह निश्चय ही स्वली चिन्तन का उदाहरण होगा |इस तरह के चिन्तन की एक खास विशेषता यह है कि इससे किसी समस्या का समाधान नहीं हो पता है |

2 यथार्थवादी चिन्तन \_यथार्थवादी चिन्तन जैसे चिन्तन को कहा जाता है जिसका संबंध वास्तविकता (REALITY)से होता है और इसके सहारे व्यक्ति किसी समस्या का समाधान कर पाता है |उदाहरणार्थ,यदि कोई व्यक्ति कार में बैठकर सफर कर रहा है और कर अचानक रुक जाती है |ऐसी समस्या के उत्पन्न होने पर व्यक्ति तरह- तरह की बातें सोचना प्रारम्भ कर देता है | जैसे \_कहीं पेट्रोल तो खत्म नहीं हो गया है ,कहीं इंजन में कोई खराबी तो नहीं आ गयी है ,कहीं चक्के का टायर तो नहीं फट

गया आदि –आदि |इस तरह का चिन्तन यथार्थवादी चिन्तन का उदाहरण है |